बच्चों के श्रेष्ठ सामाजिक नाटक

जसोदा बाबू की अमर गाथा तथा अन्य नाटक





प्रकाश मनु



बच्चों के श्रेष्ठ सामाजिक नाटक

नाटक बच्चों के लिए एक ऐसी जादुई कला है, जो उन्हें सदियों से रिझाती आई है। नाटक में ही बच्चे का मन सबसे अधिक रमता है, लिहाजा गली-मोहल्लों, स्कूल के फंक्शनों या फिर राष्ट्रीय पर्वों पर जब कोई मन को छू लेने वाला अच्छा नाटक होता है, तो अनगिनत आँखें एक साथ भीगती हैं और अनगिनत होंठों पर एक साथ हँसी फुरफुराती है।

बच्चों के श्रेष्ठ सामाजिक नाटकों के इस संग्रह में बच्चों के लिए खास तौर से लिखे गए ऐसे ही नाटक शामिल हैं, जिनमें बच्चे अपने आसपास की दुनिया के दुख-दर्द और परेशानियों को जान सकेंगे और उनके मन में यह विचार आएगा कि आखिर एक सुंदर दुनिया गढ़ने के लिए वे भी बहुत कुछ कर सकते हैं।

बेशक ये नए जमाने के ऐसे अनोखे और खूबसूरत नाटक हैं, जिन्हें मंच पर खेला जाए तो हर बच्चे के चेहरे पर एक आनंदभरी मुसकान खेलती नजर आएगी। और वे खेल-खेल में बहुत कुछ सीखेंगे भी।

प्रकाश मनु

जन्म : 12 मई, 1950 को शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश में।

शिक्षा : अपने निराले फक्कड़ अंदाज में जिंदगी जीने वाले प्रकाश मनु शुरू में विज्ञान के प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहे। आगरा कॉलेज, आगरा से भौतिक विज्ञान में एम.एस-सी. करने के बाद, साहित्य में दिलचस्पी की वजह से जीवन की राह ही बदल गई। पच्चीस वर्षों तक लोकप्रिय बाल पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। अब पूरी तरह स्वतंत्र लेखन। बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

उपन्यास : यह जो दिल्ली है, कथा सर्कस, पापा के जाने के बाद।

कहानियाँ : 21 श्रेष्ठ कहानियाँ, मिसेज मजूमदार, जिंदगीनामा एक जीनियस का, अरुंधती उदास है, तुम कहाँ हो नवीन भाई, सुकरात मेरे शहर में, अंकल को विश नहीं करोगे।

कविता : एक और प्रार्थना, छूटता हुआ घर, कविता और कविता के बीच।

बाल साहित्य : बच्चों की 51 हास्य कथाएँ, ज्ञान-विज्ञान की आश्चर्यजनक कहानियाँ, मातुंगा जंगल की 51 अचरजभरी कहानियाँ, परियों की 51 मनभावन कहानियाँ, तेनालीराम की चतुराई के अनोखे किस्से, चिन-चिन चूँ, नंदू भैया की पतंगें (कहानियाँ), गोलू भागा घर से, एक था ठुनठुनिया, चीनू का चिड़ियाघर, नन्ही गोगो के कारनामे, खुक्कन दादा का बचपन (उपन्यास), हाथी का जूता, इक्यावन बाल कविताएँ (कविताएँ)। हिंदी में बाल कविता का पहला व्यवस्थित इतिहास 'हिंदी बाल कविता का इतिहास' लिखकर ऐतिहासिक महत्व का काम किया। इसके अलावा संस्मरण, साक्षात्कार और आलोचना में कुछ अलग सा काम। कई महत्वपूर्ण संपादित पुस्तकें भी।

पुरस्कार : साहित्य अकादमी के पहले बाल साहित्य पुरस्कार तथा हिंदी अकादमी के 'साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित। कविता-संग्रह 'छूटता हुआ घर' पर प्रथम गिरिजाकुमार माथुर स्मृति पुरस्कार।

पता : 545, सेक्टर-29, फरीदाबाद- 121008 (हरियाणा)

मो. 09810602327

बच्चों के श्रेष्ठ सामाजिक नाटक : जसोदा बाबू की अमर गाथा तथा अन्य नाटक

साहित्य अकादमी के पहले बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित लेखक की कृति

डायमंड बुक्स

eISBN: 978-93-5261-133-1

प्रकाशाधीन: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन: 011-40712100, 41611861
ई-मेल : ebooks@dpb.in
वेबसाइट : www.diamondbook.in
संस्करण : 2014

BACCHON KE SHRESHTH SAMAJIK NATAK

By -Prakash Manu

समर्पण

हिंदी के जाने-माने बाल साहित्यकार
मस्तराम कपूर को,
जिन्होंने एक से एक उम्दा नाटक
और कहानियाँ लिखकर
बाल साहित्य का भंडार भरा।



भूमिका

बच्चों के लिए निराले आनंद से भरपूर श्रेष्ठ सामाजिक नाटक

नाटक बच्चों की सर्वप्रिय विधा है, जो बच्चों को सदियों से रिझाती आई है। नाटक में ही बच्चे का मन सबसे अधिक रमता है, क्योंकि इसमें बच्चे की समूची कला-प्रतिभा की अभिव्यक्ति होती है, जो कहीं और देखने को नहीं मिलती। फिर बच्चे जो कुछ देखते-सुनते हैं, उन्हें खूबसूरत ढंग से नकल करके ज्यों का त्यों सुना देने की कला में तो जैसे उन्हें जैसे महारत हासिल है। यह सब वे इतने आनंददायक ढंग से करते हैं कि देखकर कई बार चकित रह जाना पड़ता है। यही वजह है कि नाटकों के साथ बच्चों का बड़ा पुराना और गहरा रिश्ता है और उन्हें नाटकों में जितना आनंद आता है, उतना शायद ही साहित्य के किसी और रूप में। फिर नाटक की एक खास बात यह भी है कि उसमें केवल किस्सा-कहानी, चुटीले संवाद और गीत-संगीत ही नहीं होता, बल्कि समूची जिंदगी उनके सामने होती है, जिसमें वे दुनिया के तमाम रूप और शक्लें देखते हैं। गली-मोहल्लों, स्कूल के फंक्शनों या फिर राष्ट्रीय पर्वों पर जब कोई मन को छू लेने वाला अच्छा नाटक होता है, तो नाटक प्रस्तुत करने वालों के साथ उस रस में भीगने वाले एक साथ असंख्य लोग होते हैं। अनगिनत आँखें एक साथ भीगती हैं और अनगिनत होंठों पर एक साथ हँसी फुरफुराती है। ठहाके लगते हैं और लगता है कि हम किसी अगाध आनंद के सागर में गोते खा रहे हैं।

लिहाजा नाटकों में बच्चों के प्राण बसते हैं। खासकर ऐसे क्षणों में जब बच्चे नाटकों में खुद अपने जैसे बच्चों और उनकी मुश्किलों को सामने मंच पर देखते हैं या किसी बड़े लक्ष्य के लिए उन्हें हिम्मत और बहादुरी से आगे बढ़ते देखते हैं, तो उनके भीतर एक गहरा रोमांच पैदा होता है। उनके चेहरे और आँखों की चमक कह रही होती है, कि ऐसा तो हम भी कर सकते हैं, जरूर कर सकते हैं। ये ऐसे पल होते हैं, जब बच्चे को महसूस होता है कि उसके भीतर अनंत सोई हुई शक्तियाँ हैं और वह उन्हें जगाए तो सचमुच इस दुनिया को बदल सकता है। इसीलिए जब कल्पनाशीलता से भरे सामाजिक नाटक उनके सामने प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनमें बच्चों के आसपास के गली-मोहल्ले या समाज की कोई समस्या अनूठे ढंग से उठाई जाती है, तो बच्चे के आगे यथार्थ की दुनिया के कुछ नए कपाट और खिड़कियाँ खुलती हैं। नाटक

बड़ी गहरी अनुभूति और कशमकश के जरिए किसी समस्या को उठाता है, इसलिए बच्चे के मन पर उसका असर भी कहीं अधिक गहरा पड़ता है।

बच्चों के श्रेष्ठ सामाजिक नाटकों के इस संग्रह में बच्चों के लिए खास तौर से लिखे गए ऐसे ही नाटक शामिल हैं, जिनमें बच्चे अपने आसपास की दुनिया के दुख-दर्द और परेशानियों को जान सकेंगे और उनके मन में यह विचार आएगा कि आखिर एक सुंदर दुनिया गढ़ने में उनकी क्या भूमिका हो सकती है, जिसमें ये दिक्कतें और परेशानियाँ न हों। इस पुस्तक में शामिल नाटकों में 'जब राजकुमारी ने भूख को जाना', 'राख में छिपे सुनहले अक्षर', 'ताजी-ताजी पूरी-भाजी', 'रज्जो की अनोखी सहेली', 'आखिर जीत गई धुन्नू की धुन', 'एक था वसंत' तथा 'धरती का कलाकार' ऐसे ही नाटक हैं, जिनमें समाज के ऐसे रूप और समस्याएँ हैं, जिन्हें जानकर बच्चे इन्हें दूर करने का संकल्प ले सकते हैं। और तब जो दुनिया बनेगी, वह सचमुच बड़ी खुशहाल दुनिया होगी, जिसमें हर किसी के चेहरे पर खिली-खिली सी मुसकान होगी। 'बच्चा-बच्चा माँग रहा है पंपापुर' सरीखे नाटकों में बच्चों की यही भावना कुछ अनोखे ढंग से सामने आती है। साथ ही ये नाटक बच्चों और किशोर पाठकों को हिम्मत से जीने और दुख-परेशानियों का हँसकर मुकाबला करने का हौसला भी देते हैं।

उम्मीद है, बच्चों और किशोर पाठकों के साथ-साथ उनके अभिभावक और अध्यापक भी इन्हें रुचि से पढ़ेंगे और मंचित करके इनमें छिपे हँसी-खुशी के लम्हों को साकार करेंगे।

545, सेक्टर 29 प्रकाश मनु

फरीदाबाद (हरियाणा)

मो. 09810602327

क्रम



जसोदा बाबू की अमर गाथा

पात्र-परिचय
एक छोटा सा बच्चा अनाथ जस्सू
जस्सू का चाचा
मास्टर अयोध्या बाबू
स्कूल के बच्चे

कुछ लेखक, पत्रकार और पढ़े-लिखे युवक

पहला दृश्य

(स्थान—पहाड़ पर बसा एक छोटा सा गाँव जानकीपुर। मंच पर इसी जानकीपुर गाँव के एक घर में बैठे मास्टर यशोदानंद जी कुछ पढ़ने में लीन दिखाई दे रहे हैं। यशोदानंद जी देश के नामी विद्वान और जाने-माने लेखक हैं, गाँव के लोग उन्हें जसोदा बाबू कहकर बुलाते हैं। जसोदा बाबू की प्रतिभा और विद्वत्ता की सभी प्रशंसा करते हैं। जसोदा बाबू शुरू में देश-विदेश में बहुत घूमे। उनके भाषणों की धूम मची। पर इधर कई वर्षों से उन्होंने कहीं भी आना-जाना बंद कर दिया है। उनसे मिलने के लिए लोग अकसर जानकीपुर में चलकर आते...)

एक युवक : (सिर झुकाकर) आपके विचारों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है जसोदा बाबू। आपसे मिलकर मेरा जीवन धन्य हो गया। पर मेरा मन है कि हमारी संस्था के वार्षिक सम्मेलन में आकर भी आप अपना व्याख्यान दें।

जसोदा बाबू : क्षमा करें, मुझे तो अपने गाँव जानकीपुर में रहना ही अच्छा लगता है। यही मेरी साधना-भूमि है। यहाँ के लोगों में बड़ी सरलता है। अब जितना भी जीवन बाकी है, इन्हीं के बीच गुजरेगा।

दूसरा युवक : पर आपके विचारों से हमें इतनी प्रेरणा मिली है। काश, दूसरे लोगों तक भी ये विचार पहुँच पाते। आप आकर अपनी बातें कहेंगे, तो उन पर भी गहरा असर पड़ेगा।

जसोदा बाबू : (मुसकराते हुए) मेरे विचार मेरी किताबों में है, आप उन्हें पढ़ लें। चाहें तो दूसरे लोगों को भी पढ़वाएँ। पर जानकीपुर से तो मैं एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकता।

तीसरा युवक : (चेहरे पर प्रसन्नता) आपसे हम नए विचारों की रोशनी लेकर जा रहे हैं और इन्हें दूर-दूर तक फैलाएँगे।

जसोदा बाबू : मेरा आशीर्वाद आपके साथ है।

(जानकीपुर में जसोदा बाबू का सारा दिन या तो वहाँ के लोगों के साथ बातें करने, घूमने-फिरने में बीतता है या फिर 'आदर्श पाठशाला' में बैठकर बच्चों को पढ़ाने और लिखने-पढ़ने में। वे अकसर कहते हैं...)

जसोदा बाबू : यही मेरा स्वर्ग है। यहाँ बैठकर जितने अच्छे विचार मन में आते हैं और मैं जितना काम कर लेता हूँ, उतना कहीं और हो ही नहीं सकता।

दूसरा दृश्य

(अकसर दूर-दूर से लेखक-पत्रकार जसोदा बाबू के पास आकर उनसे उनके

जीवन की कहानी सुनते। एक बार जसोदा बाबू ने सुनाई जानकीपुर की कहानी...)

एक आदमी : अच्छा जानकी बाबू, आपने यह तो बताया ही नहीं कि इस गाँव का नाम जानकीपुर कैसे पड़ा? मैंने सुना है कि पहले इस गाँव का नाम यह नहीं था।

जसोदा बाबू : (मुसकराते हुए) आपने ठीक सुना है। कोई सौ-सवा सौ साल पहले इस गाँव का नाम था—बड़खेड़ा। तब इस गाँव में एक विद्वान आए जानकीशरण जी। उन्हें यह गाँव इतना सुंदर और मनोरम लगा कि वे यहीं बस गए। उन्होंने गाँव के लोगों को पढ़ाने के लिए एक पाठशाला भी खोली, 'आदर्श पाठशाला', जिसमें दूर-दूर के गाँवों के बच्चे आकर पढ़ा करते थे। इनमें कई पढ़-लिखकर बहुत ऊँचे उठे, दूर-दूर तक गए। आज भी वह पाठशाला यहाँ है। जानकी बाबू की याद में ही इस गाँव का नाम रखा गया जानकीपुर।

दूसरा आदमी : (चकित होकर) अच्छा, यह बात तो हमें पता ही नहीं थी।

जसोदा बाबू : (मुसकराते हुए) जानकीशरण जी के बाद इस पाठशाला के प्रधान आचार्य थे अयोध्यानाथ जी। वही मेरे गुरुदेव थे। उनके जाने के बाद उनके अधूरे काम को पूरा करने का जिम्मा मेरा है। इसलिए जितना समय मिलता है, उतना मैं स्कूल के बच्चों को पढ़ाने-लिखाने में लगाता हूँ। खुद भी सीखता हूँ और नई-नई किताबें लिखता हूँ।

(पृष्ठभूमि में जसोदा बाबू की किताबों की अलमारी। उसमें रखी किताबों पर फोकस।)

एक आदमी : (प्रसन्न चेहरा) अरे वाह, जसोदा बाबू, यह तो बड़ी अच्छी कथा सुनाई आपने कि बड़खेड़ा गाँव का नाम कैसे खुद-ब-खुद जानकीपुर पड़ गया। अब तो देश-विदेश से इसी नाम से चिट्ठियाँ आती हैं। जाने कहाँ-कहाँ से लोग जानकीपुर को ढूँढ़ते हुए, यहाँ चले आते हैं।

दूसरा आदमी : (आग्रह करते हुए) मगर जसोदा बाबू, खुद आपकी कथा? वह भी तो सुनाइए न। क्या आपके जीवन की भी कोई छिपी हुई कथा है? नहीं तो भला इस गाँव से आपको इतना मोह कैसे हो गया? कभी आप हम सभी को यह किस्सा भी सुनाइए न।

तीसरा दृश्य

(जसोदा बाबू भावुक होकर अपनी दर्दभरी कहानी सुना रहे हैं, जिसे सुनते हुए सभी के चेहरे पर गहरी उदासी की छाया तैर रही है।...)

जसोदा बाबू : मेरी कहानी क्यों सुनना चाहते हैं आप? वह तो बड़ी उदासी भरी कहानी है। अच्छा, नहीं मानते हैं आप, तो फिर सुनिए। (एक पल रुककर...) बहुत पहले, यही कोई साठ बरस पहले इसी जानकीपुर में रहता था एक अभागा

लड़का, जस्सू। वह अक्सर मैली कमीज और फटा पाजामा पहने, भेड़-बकरियाँ चराता दिखाई पड़ जाता। उम्र होगी कोई सात-आठ बरस की। लेकिन इस उम्र में ही वह अनाथ हो गया था। पहले माँ गुजरीं और उसके थोड़े अरसे बाद ही पिता भी चल बसे। घर में मिट्टी की दीवारें और कंगाली के सिवा कुछ न था। क्या खाए, कहाँ रहे? जस्सू की समझ में कुछ नहीं आता था। बस, माँ-बाप का प्यार याद करके वह रोता, दिन भर रोता ही रहता। जस्सू का चाचा अवधू भी था उस गाँव में। उसका छोटा सा खेत था, साथ ही भेड़-बकरियाँ भी पालता था। जस्सू को भूख से बेहाल, दर-दर भटकते देखा तो उसने कहा...

जस्सू का चाचा : सुनो जस्सू, तुम सुबह-शाम दो रोटी मेरे यहाँ खा लिया करो। लेकिन बदले में तुम्हें ये भेड़-बकरियाँ चरानी पड़ेंगी। हाँ, काम से जी न चुराना। नहीं तो कान पकड़कर उसी वक्त घर से बाहर निकाल दूँगा।

जस्सू : (डरते-डरते) ठीक है चाचा।

(अगले दिन से जस्सू भेड़-बकरियाँ चराने जाने लगा। अकसर भेड़-बकरियाँ अपने रास्ते चलती जातीं और पीछे-पीछे जस्सू। बस, कोई भेड़-बकरी किसी गड्ढे में गिरने को होती या किसी गलत रास्ते पर पड़ जाती, तो वह उसे सँभाल लेता। धीरे-धीरे सभी भेड़-बकरियाँ उससे ऐसी हिल-मिल गईं, जैसे उसकी दोस्त हों। जस्सू ने सबके अलग-अलग नाम रख दिए थे। और उन नामों से पुकारते ही वे दौड़कर चली आतीं...)

जस्सू : काली आ, भूरी आ, गोरिया आ। आ-आ-आ...जल्दी आ। झटपट।

(बकरियों के आने पर तीनों को बारी-बारी से प्यार से कहलाते हुए...)

ओहो, मेरी सयानी, मेरी बीबोरानी।

(जस्सू को लगता, अकेलापन बाँटने के लिए उसे बहुत से दोस्त मिल गए हैं। लेकिन तो भी, जब-जब माँ-बाप की याद आती, उनका प्यार याद आता, उसकी आँखें आँसुओं से भीग जातीं।)

चौथा दृश्य

(एक दिन जस्सू भेड़-बकरियाँ चराता हुआ अपनी राह पर जा रहा था। तभी उसे बस्ता और तख्ती लिए, साफ-सुथरे कपड़े पहनकर स्कूल जाते हुए कुछ बच्चे दिखाई पड़े। उन्हें देखकर जस्सू सोचने लगा...)

जस्सू : काश, आज मेरे भी माँ-बाप होते, तो मैं भी इन बच्चों की तरह स्कूल पढ़ने जाता।

(कुछ देर बाद)अजीब बात है। ऐसा लग रहा है, जैसे मेरे पैर जादू से किसी खास दिशा में खिंचते चले जा रहे हैं।

(जस्सू ने भेड़-बकरियों को घेरकर उसी रास्ते पर घुमा लिया जिधर बच्चे जा रहे थे। अपनी भेड़-बकरियों के साथ वह उसी दिशा की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह उसी स्कूल के पिछवाड़े जा पहुँचा। बच्चे स्कूल में जाकर पढ़ने लगे। वे सब मिलकर वर्णमाला याद कर रहे थे, 'क से कबूतर, ख से खरगोश, ग से गधा, घ से घड़ी...!' जस्सू को अचानक याद आया...)
ओह, मेरे पिता जी भी तो इसी तरह मुझे वर्णमाला सिखाया करते थे। तब मुझे पढ़ाई बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी। पर आज जाने क्या बात है कि बच्चों की आवाजें सुनकर मुझ पर जैसे कोई जादू-मंतर सा हो गया है। मेरा मन हो रहा है कि मैं दौड़कर स्कूल के अंदर चला जाऊँ और उन बच्चों के साथ बैठकर खुद उनके साथ स्वर में स्वर मिलाकर दोहराने लगूँ, 'क से कबूतर, ख से खरगोश...!'

जस्सू : आज जाने क्यों मुझे सारी बातें फीकी लग रही हैं और 'क से कबूतर ख से खरगोश, ग से गधा, घ से घड़ी...!' ये स्वर ऐसे मीठे लग रहे हैं, जैसे माँ कोई प्यारी-प्यारी लोरी या गाना गाया करती थी। बीच-बीच में मास्टर जी की आवाज भी सुनाई पड़ती है। कोई बच्चा गलत बोलता है या उनके सवाल का जवाब नहीं दे पाता, तो वे बड़े प्यार से उसे टोकते और सही उत्तर बता देते हैं। बीच-बीच में वे हँसकर बच्चों से बातें करते हैं और कोई छोटी सी मजेदार कहानी भी सुनाते हैं। (हँसते हुए) ओह, याद आ गया, कल ही तो एक छोटी सी कहानी उन्होंने सुनाई थी चूहे-बिल्ली की कि कैसे सारे चूहे मिलकर बिल्ली के गले में घंटी बाँधने चलते हैं! कहानी इतनी मजेदार थी और मास्टर जी इतने प्यारे ढंग से उसे सुना रहे थे कि स्कूल के पिछवाड़े बैठा मैं जोर से खिलखिला उठा था। और मजे की बात यह है कि भेड़-बकरियाँ मुझे चौंककर देखने लगी थीं।
(अब तो जस्सू का यह रोज का नियम ही बन गया था। वह भेड़-बकरियों को उसी दिशा में मोड़ देता, जिधर स्कूल था और स्कूल के पिछवाड़े बैठा बच्चों और मास्टर जी की आवाजें सुनता रहता। कभी वर्णमाला याद करने की आवाजें, कभी गिनती और पहाड़े याद करने की आवाजें। कभी-कभी बच्चों की आपस की लड़ने-झगडत्त□ की आवाजें। और कभी सबकी एक साथ हँसी और मजाक! सुनकर जस्सू का दिल खुश हो जाता...)

जस्सू : (अपने आप से) सबसे अधिक मुझे अच्छा लगता है, मास्टर जी का व्यवहार। मुझे यह भी पता चल गया है कि मास्टर जी का पूरा नाम अयोध्यानाथ है और वे बहुत विद्वान हैं। दूर-दूर तक उनका नाम है। मुझे बड़ी हैरानी होती है कि इतने विद्वान हैं मास्टर जी, लेकिन जरा भी घमंड नहीं। इतने सरल हैं कि बच्चों को हमेशा हँसाते रहते हैं और खेल-खेल में ही पाठ याद करा देते हैं। (एक पल रुककर) काश! मैं भी इसी तरह स्कूल जाकर मास्टर अयोध्यानाथ

जी से पढ़ पाता। (उदास चेहरा) पर मैं तो अभागा हूँ। मेरी ऐसी किस्मत कहाँ?

(कुछ देर बाद मन ही मन निश्चय करते हुए) तो भी मैंने एक निर्णय कर लिया है। मैं मास्टर अयोध्यानाथ जी से ही पढूँगा। स्कूल के अंदर नहीं जा सकता तो क्या? स्कूल के बाहर बैठकर ही अपनी पढ़ाई करूँगा। मास्टर जी जो-जो पाठ पढ़ाएँगे, वह बाहर बैठा-बैठा याद करता रहूँगा।

(जस्सू ने मन ही मन मास्टर अयोध्यानाथ जी को गुरु मानकर प्रणाम किया और अपनी पढ़ाई शुरू कर दी। उस दिन के बाद सचमुच उसे बाहर बैठे-बैठे अपने पाठ बहुत अच्छी तरह याद हो जाते। उसने पूरी वर्णमाला याद कर ली। सौ तक गिनती और बीस तक पहाड़े भी। पर लिखने के लिए न खड़िया थी, न चॉक। जमीन पर लकड़ी से लकीरें खींच-खींचकर वह किसी तरह काम चलाया करता। भेड़-बकरियाँ मजे से आसपास चरती रहतीं और जस्सू अपनी पढ़ाई में लीन रहता...।)

पाँचवाँ दृश्य

(एक दिन जस्सू इसी तरह स्कूल के पिछवाड़े बैठा अपनी पढ़ाई में लगा था कि उसे मास्टर अयोध्यानाथ जी की आवाज सुनाई पड़ी...)

मास्टर जी	:	हाँ तो हरीश, बताओ जरा कि उन्नीस निम्मा कितने होते हैं?
हरीश	:	(कुछ सोचते हुए...) याद नहीं आ रहा मास्टर जी, बिल्कुल याद नहीं आ रहा।
मास्टर जी	:	चलो, कोई और बच्चा बताए जल्दी से। हाँ, कौन बताएगा, उन्नीस निम्मा कितने होते हैं? तुम बताओ, अशोक... ?
अशोक	:	मास्टर जी, नहीं पता।
मास्टर जी	:	अच्छा, जिसे पता है, वह हाथ खड़े करे।...अरे, कोई नहीं, एक भी नहीं? (दुखी होकर) कितनी खराब बात है। कल मैंने तुम सबसे कहा था न, उन्नीस का पहाड़ा याद करके आना। लेकिन तुममें से किसी ने याद नहीं किया। कोई नहीं बता सका कि उन्नीस निम्मा... ? (मास्टर जी कुछ आगे कहना चाहते थे, तभी अचानक उन्हें सुनाई पड़ा...)
अनजानी आवाज	:	एक सौ इकहत्तर! उन्नीस निम्मा एक सौ इकहत्तर।
मास्टर जी	:	(हैरानी से) कौन बोला, कौन? (मास्टर जी ने इधर-उधर निगाहें घुमाईं। मगर सब बच्चे चुप। तो फिर आवाज कहाँ से आई थी? तभी अचानक एक बच्चे ने बताया...)
एक बच्चा	:	मास्टर जी, जस्सू! यह जस्सू की आवाज थी।

मास्टर जी : (बुरी तरह चौंककर) जस्सू?...कौन जस्सू? क्या कह रहे हो तुम?

दूसरा बच्चा : मास्टर जी वही जस्सू, जो स्कूल के पिछवाड़े बैठा-बैठा जमीन पर लकड़ी से लिखता रहता है। अब भी वहीं बैठा होगा मास्टर जी।

मास्टर जी : सच... ?

तीसरा बच्चा : हाँ, मास्टर जी।

(सुनते ही मास्टर जी का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। वे उसी समय स्कूल से निकले और घूमकर स्कूल के पिछवाड़े जा पहुँचे। पीछे-पीछे क्लास के कुछ बच्चे भी! वहाँ मास्टर जी ने जो कुछ देखा, उस पर एक क्षण के लिए तो उन्हें यकीन ही नहीं आया। एकदम मैली फटी कमीज, फटा पाजामा पहने एक बच्चा जमीन पर पालथी लगाकर बैठा था। लकड़ी से खोद-खोदकर जमीन पर वर्णमाला, गिनती और पहाड़े लिख रहा था।)

छठा दृश्य

(मास्टर जी को पास आते देख, वह लड़का चौंक उठा और उठकर खड़ा हो गया। शर्म के मारे उसका चेहरा लाल था। गरदन झुकी हुई थी। मास्टर जी ने प्यार से उससे कहा...)

मास्टर जी : तुम्हीं जस्सू हो न? तुम्हारा ही नाम जस्सू है!

(बच्चे ने हाँ में गरदन हिलाई। उससे एक शब्द भी नहीं बोला जा रहा था।)

मास्टर जी : (सिर पर हाथ फेरते हुए) तुम भी स्कूल में पढ़ोगे जस्सू? पढ़ना चाहते हो?

(सुनते ही जस्सू एकाएक फूट-फूटकर रो पड़ा।) उसका पूरा चेहरा आँसुओं से भीग गया। मास्टर जी ने उसी समय उसे छाती से लगा लिया...)

मास्टर जी : तुम पढ़ोगे, जरूर पढ़ोगे। मैं पढ़ाऊँगा तुम्हें। तुम्हारे जैसा बच्चा नहीं पढ़ेगा तो कौन पढ़ेगा?

(कुछ देर बाद जस्सू थोड़ा सहज हुआ, तो उसे चाचा की याद आ गई और अपने हालात भी...)

जस्सू : मास्टर जी, मेरे माता-पिता नहीं हैं। चाचा हैं, वे नहीं चाहते कि मैं पढ़ूँ-लिखूँ। वे चाहते हैं, मैं उनकी भेड़-बकरियाँ चराता रहूँ। मेरे पास फीस के पैसे भी नहीं हैं।

मास्टर जी : (प्यार से) चिंता न करो, मैं मिलूँगा तुम्हारे चाचा से। जरूर कोई न कोई रास्ता निकल आएगा।

(उसी दिन मास्टर अयोध्यानाथ जस्सू के चाचा अवधू से जाकर मिले। उसे समझाया..)

मास्टर जी : सुनो भाई, यह लड़का बड़ा लायक है। पढ़-लिख गया तो तुम्हारे पूरे कुल का नाम रोशन करेगा।

जस्सू का चाचा	:	वह तो ठीक है मास्टर जी। पर मैं गरीब आदमी हूँ। भला इसकी फीस का इंतजाम कहाँ से करूँगा?
मास्टर जी	:	इसकी चिंता न करो भाई। इसकी फीस के पैसे मैं अपनी तनख्वाह में से दिया करूँगा। ऐसा लायक बच्चा अनपढ़ रह जाए, यह तो पूरे जानकीपुर गाँव का अपमान है।
अवधू	:	ठीक है, मास्टर जी। फिर आप जैसा ठीक समझो।

सातवाँ दृश्य

(अगले दिन से जस्सू का उस स्कूल में दाखिल हो गया। अकसर फटे कपड़े पहने वह स्कूल जाता। पैरों में जूते भी नहीं होते थे। लेकिन चेहरे पर बुद्धिमत्ता की चमक थी। जो भी सवाल मास्टर जी पूछते, झट जवाब दे देता। उस साल वह अपनी क्लास में फर्स्ट आया...)

मास्टर जी	:	जस्सू बेटा, बस इसी तरह मेहनत करते रहो। तुम जरूर पढ़-लिखकर बड़े आदमी बनोगे।
जस्सू	:	मास्टर जी, आप चिंता न करें। आपने मेरे लिए बहुत किया है। अब मैं भी मेहनत करने में कोई कोर-कसर नहीं रखूँगा।

(फिर जस्सू तेजी से आगे बढ़ता गया। पाँचवीं में आसपास के सारे स्कूलों में उसका पहला नंबर था। उसे सरकारी वजीफा मिलने लगा। आठवीं में पूरे जिले में वह प्रथम आया। हाई स्कूल में पूरे बोर्ड में उसका तीसरा नंबर था। आगे की पढ़ाई के लिए मास्टर अयोध्यानाथ जी ने उसे बनारस भेज दिया। वहाँ यूनिवर्सिटी में उसने ऊँची पढ़ाई की। वहीं उसके लेख और किताबें छपने लगी थीं। दूर-दूर तक उसका नाम फैलता गया। वहाँ से पढ़कर आया तो...)

मास्टर जी	:	अब आगे क्या करना चाहते हो जस्सू?
जस्सू	:	(भावुक होकर) मास्टर जी, आपने मुझे धूल-मिट्टी से उठाकर बड़ा किया। पर अभी मेरे जैसे बहुत हैं। मैं गाँव-गाँव में शिक्षा का अलख जगाना चाहता हूँ।
मास्टर जी	:	(खुश होकर) शाबाश बेटे, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।

(जस्सू ने एक-एक कर बहुत सी किताबें लिखीं। उन पर बड़े-बड़े पुरस्कार मिले। लेकिन हर बार मास्टर अयोध्यानाथ जी के पास आकर उनके चरणों में बैठकर वह कहता...)

जस्सू	:	मास्टर जी, इसमें मेरा कुछ नहीं है। सब कुछ आपका ही दिया है। आपने उस दिन जस्सू के सिर पर हाथ फेरकर उसके हृदय में ज्ञान का जो दीपक जलाया था, यह उसी का प्रकाश है। सारी दुनिया जिसे यशोदानंदन के रूप में जानती है, वह असल में तो वही आपका जस्सू ही है।

आठवाँ दृश्य

(जस्सू यानी यशोदानंदन को पेरिस में कला पर व्याख्यान देने के लिए बुलाया गया। उसके व्याख्यान की सब ओर धूम मची। पूरी दुनिया से आए विद्वानों ने कहा...)

एक विद्वान : हमें पता नहीं था, भारत में कला को लेकर इतना ऊँचा चिंतन हुआ है।

दूसरा विद्वान : आपने तो हमें एक नई दिशा दे दी।

यशोदानंदन : (मुसकराते हुए) इसमें मेरा कुछ नहीं है। असल में भारत में सदियों पहले ही इस दिशा में बड़ा काम हुआ है। पर ज्यादातर लोगों ने उसे भुला दिया। मेरे गुरु जी ने मुझे इस दिशा में फिर से काम करने की दृष्टि दी, इसी कारण मैं कुछ कर सका।

तीसरा विद्वान : धन्य हैं आपके गुरु जी।

(यशोदानंदन खुशी-खुशी पेरिस से भारत आया। फिर रेलगाड़ी पर बैठकर अपने गाँव जानकीपुर की ओर चल दिया। वह जल्दी से जल्दी मास्टर अयोध्यानाथ जी के पास जाकर सब कुछ बताना चाह रहा था। लेकिन जैसे ही वह जानकीपुर लौटा, उसे पता चला, मास्टर अयोध्यानाथ उसे छोड़कर जा चुके हैं। वे अपने शिष्य जस्सू के लिए दो पंक्तियों का एक छोटा सा पत्र छोड़ गए थे...)

मास्टर जी की आवाज : (आवाज में कंपन और भावुकता है...) प्रिय जस्सू, जानकी बाबू के अधूरे काम को जितना आगे मैं बढ़ा सका, मैंने किया। अब यह जिम्मा तुम पर छोड़कर जा रहा हूँ। मेरा प्यार, आशीर्वाद...

(बस, उसी दिन जस्सू को अपने जीवन की मंजिल मिल गई। उसने तय कर लिया कि...)

जस्सू : अब सारा जीवन जानकीपुर में ही रहना है। गुरु जी ने जो ज्ञान का दीपक जलाया था, वैसे दीपक जगह-जगह जलाने हैं।

(इतनी कथा सुनाकर जसोदा बाबू चुप हो जाते हैं। और अपनी कल्पना में दूर, बहुत दूर, भविष्य के पार देखने लगते हैं।)

जसोदा बाबू : इसके आगे अब मैं कुछ बोल नहीं पाऊँगा। बस, मेरी कहानी खत्म हो गई।...या शायद खत्म नहीं हुई, अभी तो शुरुआत हुई है।

एक आदमी : (भावना में डूबकर) बस जसोदा बाबू, अब तो पूछने के लिए कुछ बचता ही नहीं।

दूसरा आदमी : (प्रसन्न चेहरा) धन्य हैं आप, जसोदा बाबू। धन्य हैं आपके गुरुदेव जिन्होंने आपके भीतर छिपी हुई ज्ञान की ललक को पहचाना।

तीसरा आदमी : मुझे उम्मीद है, अब जल्दी ही ज्ञान का उजाला गाँव-गाँव और गली-गली में फैलेगा। फिर भारत विश्वगुरु बनेगा, सारे संसार का मार्गदर्शक।

(सब मिलकर गोल घेरे में नाचते हुए गाते हैं...)
छोटे मुख से कैसे कह दूँ
इस भारत की बात रे,
सोने जैसे दिन हैं इसके
चाँदी जैसी रात रे।
(आखिरी दो पंक्तियों को बच्चे फिर-फिर दोहराते हैं। धीरे-धीरे स्वर मद्धिम होता जाता है। संगीत थमता है और इसके साथ ही सब बच्चे अपनी-अपनी जगह, अलग-अलग मुद्राओं में फ्रीज हो जाते हैं।)

(परदा गिरता है।)



राख में छिपे सुनहले अक्षर

पात्र-परिचय
प्रसिद्ध साहित्यकार सरस्वती बाबू
बच्चा सरू और उसकी माँ
गंगा काका
साहित्य सभा के प्रमुख आशुतोष जी
पद्मधर जी
कुछ दर्शक, श्रोता आदि

पहला दृश्य

(मंच पर सरस्वती बाबू के साहित्यिक सम्मान का दृश्य। साहित्य-सभा के हॉल में खूब चहल-पहल है। कैमरामैन अपने कैमरे लिए उपस्थित दर्शकों के फोटो खींच रहे हैं। पत्रकारों के लिए अलग कतार है, जहाँ वे कागज-कलम लिए बैठे हैं। कुछ टीवी के लोग बड़े-बड़े कैमरे लेकर सभा की रिकॉर्डिंग कर रहे हैं। हर ओर उत्साह और चहल-पहल...)

एक आदमी : साहित्य-सभा के प्रांगण में आज कितनी भीड़ है। सारे शहर के प्रसिद्ध लेखक, कवि, चिंतक और पत्रकार यहाँ मौजूद हैं। सचमुच शुभ दिन है आज।

दूसरा आदमी : (श्रद्धा से भरकर) सरस्वती बाबू सचमुच बड़े लेखक हैं, जिनके लिए सभी के दिल में गहरा सम्मान है। खुशी की बात है कि इस सभा-कक्ष में उन्हें सम्मानित किया जा रहा है।

तीसरा आदमी : हमारे पूरे शहर के लिए यह गर्व की बात है।

(साहित्य-सभा के प्रमुख आशुतोष महोपाध्याय ने अध्यक्ष महोदय पद्मधर जी को मंच पर बुलाया। साथ ही सरस्वती बाबू को भी आमंत्रित किया। पद्मधर जी ने दीपक जलाया। फिर आशुतोष महोपाध्याय ने सरस्वती बाबू की प्रशंसा करते हुए, बड़ा भावपूर्ण भाषण दिया...)

आशुतोष जी : हमारे देश में लिखने वाले बहुत हैं, पर सरस्वती बाबू जैसा तो कोई बिरला ही होता है। सरस्वती बाबू सच्चे सरस्वती-पुत्र हैं, जिन्होंने कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, सभी कुछ लिखकर साहित्य का भंडार भरा है। उनका सम्मान करते हुए हम सब रोमांचित हैं।

(पद्मधर जी ने सरस्वती बाबू को शाल ओढ़ाकर श्रीफल और प्रशस्ति-पत्र

प्रदान किया। एकाएक जोर से तालियाँ बजने लगती हैं। फिर एक-एक कर कुछ लेखक आकर अपनी बात कहते हैं...)

एक लेखक : अपने प्रिय लेखक का यह सम्मान हम सभी के लिए गर्व की बात है।

दूसरा लेखक : सरस्वती बाबू इतने बड़े हैं कि उनके आगे झुककर हमें खुशी होती है। उनका सम्मान हर लिखने-पढ़ने वाले का सम्मान है।

तीसरा लेखक : हम सभी ने उनसे लिखना सीखा है। उनके साहित्य में जन-जन का दर्द है। इसीलिए वे हमारे समय के सबसे बड़े लेखक हैं।

(फिर आशुतोष जी ने उठकर आग्रह किया...)

आशुतोष जी : अब मैं सरस्वती बाबू से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि वे मंच पर आकर अपनी लंबी साहित्य-साधना और जीवन के अनुभवों के बारे में कुछ कहें।



दूसरा दृश्य

(सरस्वती बाबू माइक पर आकर खड़े हुए, तो उपस्थित दर्शकों ने तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया। कैमरे वालों के लैंस उधर घूम गए। पत्रकार उनका भाषण नोट करने के लिए सँभलकर बैठ गए। सभी को उत्सुकता थी कि इस खुशी और सम्मान के मौके पर सरस्वती बाबू क्या कहेंगे? सरस्वती बाबू ने हॉल में सब तरफ निगाहें घुमाईं। कुछ कहना चाहते थे। होंठ थोड़े खुले, फिर एकाएक वे चुप हो गए। उनके मुँह से एक शब्द तक नहीं निकला।)

एक लेखक : (हैरान होकर) आश्चर्य, सरस्वती बाबू को आज हो क्या गया है? वे कुछ भी कह नहीं पा रहे हैं।
यह तो हम सभी जानते हैं कि सरस्वती बाबू बहुत अच्छे वक्ता हैं। उनके भाषण से सभी प्रभावित होते हैं और कई-कई दिनों तक उसकी चर्चा करते हैं। पर आज लगता है, जैसे वे बोलना ही भूल गए हों। यह तो बड़ी अजब सी बात है।
(पूरे हॉल में सन्नाटा। एकाएक लोगों को सरस्वती बाबू का डूबा-डूबा सा स्वर सुनाई दिया...)

सरस्वती बाबू : उपस्थित सज्जनो! मैं आप सभी का शुक्रगुजार हूँ कि आप यहाँ आए और मुझे सम्मान के योग्य समझा। लेकिन क्षमा करें, आज मैं ज्यादा कुछ बोल नहीं पाऊँगा। मेरा गला रुँधा हुआ है। क्यों...? किसलिए? शायद यह भी नहीं बता पाऊँगा। बस, इतना ही समझ लीजिए, मुझे अपना बचपन याद आ रहा है। बचपन की अपनी गुरु याद आ रही हैं। वे यहाँ नहीं हैं। पर वे आ भी कैसे सकती थीं? वे तो अब इस धरती पर भी नहीं है। लेकिन मुझे बनाने वाली वही थीं। मैं तो हार गया था और मैदान छोड़कर भाग निकला था, पर वे नहीं हारीं। अगर वे इतनी कोशिश न करतीं, अपना पूरा बल न लगा देतीं, तो आज मैं यहाँ आपके सामने खड़ा न होता। लेखक होना तो दूर, मैं शायद अनपढ़, उजड्ड ही रहता।
(थोड़ा रुककर कँपकँपाते होंठों से...) मेरी वे बचपन की गुरु थीं—मेरी माँ। वे अब गुजर चुकी हैं। हाँ, गंगा काका जरूर हैं, जो इस पूरी कहानी को जानते हैं। मुझे खुशी है कि वे मेरे सामने बैठे हैं। उनका प्यार से लबालब चेहरा देखते ही, बस मुझे अपना बचपन याद आ गया। आज मैं उसी बचपन की एक छोटी सी कहानी आपको सुनाऊँगा।
(कहते-कहते सरस्वती बाबू ने थोड़ी देर के लिए आँखें बंद कर लीं। लगा, जैसे वे उड़कर सचमुच अपने बचपन के दिनों तक पहुँच गए हैं। बहुत भीगे हुए स्वर में वे बता रहे थे...)

सरस्वती बाबू : मित्रो, आज से कोई पचास बरस पहले की बात है। तब मैं अपने गाँव हिरनापुर में पहली कक्षा में पढ़ता था। पढ़ने में ज्यादा होशियार नहीं था और रोज मेरी पिटाई होती थी। हमारे स्कूल में कक्षा एक में पढ़ाने के लिए एक ही अध्यापक थे, मास्टर कमलाकांत जी। पढ़ाते तो ठीक थे, पर गुस्सा उनका तेज था। उनके गुस्से के मारे मैं थर-थर काँपता था और जो कुछ आता था, वह भी भूल जाता था। कभी गलत वर्णमाला लिखने के लिए मेरी पिटाई होती तो कभी गिनती-पहाड़े याद न करने के लिए।...

आशुतोष जी : (अपने आप से) अरे, यह तो बड़ा अद्भुत प्रसंग है। सरस्वती बाबू ने पहले कभी बताया ही नहीं।

सरस्वती बाबू : (पुरानी यादों में तैरते हुए...) घर में कोई और तो था नहीं, जो मेरी मदद करता। बस, एक माँ थीं जो अनपढ़ थीं और सारे दिन खेत में काम किया करती थीं। उन्हें भला मैं अपनी परेशानी कैसे बताता? अंदर ही अंदर मैं रोता-बिसूरता रहता था। और मुझे लगता था, मैं जीवन में कभी पढ़-लिख नहीं पाऊँगा। और एक दिन जब कक्षा में मेरी बुरी तरह पिटाई हुई, मैंने तय कर लिया कि अब कल से स्कूल जाना बंद, एकदम बंद। घर आते ही मैंने तख्ती एक ओर फेंकी, बस्ता दूसरी ओर। और माँ को अपना फैसला सुना दिया...

बालक सरू : नहीं माँ, मुझे स्कूल नहीं जाना। अब मैं कभी स्कूल नहीं जाऊँगा। कभी नहीं जाऊँगा।

सरू की माँ : (अचरज से) कभी स्कूल नहीं जाएगा? क्यों बेटा?

बालक सरू : (गुस्से में) कह दिया न, नहीं जाऊँगा, नहीं जाऊँगा, नहीं जाऊँगा।
(कहकर चारपाई पर उदास होकर लेट जाता है।)

तीसरा दृश्य

(सुनकर माँ हक्की-बक्की रह गईं। उनका चेहरा जैसे बुझ गया हो। बेटे की बात सुनते ही उनके चेहरे पर दुख की गहरी छाया दिखाई पड़ने लग गई। बालक सरू के पास जाकर उसके माथे पर हाथ फेरती हुईं...)

माँ : बेटा, तो क्या तू अनपढ़, उजड्ड ही रह जाएगा?

बालक सरू : माँ, न मुझे वर्णमाला आती है, न गिनती, न पहाड़े! स्कूल में रोज मेरी पिटाई होती है। तो फिर मैं क्या करूँ?
(बालक सरू बुरी तरह रो पड़ा। माँ ने झट उसे छाती से लगा लिया। खूब लाड़-प्यार करती हुईं...)

माँ : अरे बेटे, तू रोता क्यों है? मैं हूँ न, मैं तुझे पढ़ाऊँगी।

बालक सरू : (चकित होकर) माँ, तुम पढ़ाओगी? तुम...?

माँ : (चेहरे पर दृढ़ता) हाँ बेटा, मैं पढ़ाऊँगी। जरूर पढ़ाऊँगी। मेरा बेटा अनपढ़ नहीं रहेगा।

बालक सरू : फिर तो माँ, मैं सीख जाऊँगा। जरूर सीख जाऊँगा।

(सरू की माँ सचमुच अनपढ़ थीं, पर शायद थोड़ी सी गिनती और वर्णमाला उन्होंने बचपन में सीख ली थी। बस, पहाड़े नहीं आते थे...)

सूत्रधार : तू चिंता मत कर। गिनती और अक्षर-ज्ञान मैं करा दूँगी। पहाड़े गंगा काका से सीख लेना। पड़ोस में ही तो हैं।

सरस्वती बाबू : (मंच पर व्याख्यान देते हुए...) हम लोग गरीब थे। इतने गरीब कि चॉक और खड़िया भी नहीं जुटा सकते थे। कच्चा आँगन था। माँ वहीं बैठ जातीं और साथ में मुझे बैठा लेतीं। चूल्हे की राख या मिट्टी पर उँगलियाँ फिराकर पहले खुद क, ख, ग लिखतीं, फिर उँगली पकड़कर मुझसे लिखवातीं। ऐसे ही थोड़ा-थोड़ा सीखा, तो हिम्मत आई। फिर तो मैं कोयले से जगह-जगह घर में क, ख, ग लिखने लगा। माँ नाराज होने की बजाय उलटे खुश होतीं...

सरू की माँ : (अपने आप से) चलो, जैसे भी सही, मेरा बेटा लिखना सीख रहा है।

बालक सरू : माँ, अब तो लगता है, मैं लिखना सीख जाऊँगा। सीख जाऊँगा न?

सरू की माँ : हाँ बेटे, हाँ, जरूर सीख जाएगा। (खूब प्यार से बालक सरू की पीठ थपथपाती हुईं...) देखना, बहुत जल्दी तू होशियार हो जाएगा, बहुत जल्दी। तेरे जैसा लायक बच्चा तो दूर-दूर तक नहीं है। एक बार तेरे दिमाग में सारी चीजें बैठ जाएँ, फिर तू बड़ी तेजी से तरक्की करेगा। दूर-दूर तक तेरा नाम होगा। तू अपना और माँ-बाप का नाम रोशन करेगा।

बालक सरू : (जोश और उत्साह से भरकर) अच्छा माँ, मैं मेहनत करूँगा, बहुत मेहनत। मैं पूरी कोशिश करूँगा सीखने की। तू चिंता न करना।

सरू की माँ : शाबाश बेटे, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।

सरस्वती बाबू : (व्याख्यान देते हुए...) इसी तरह गिनती उन्होंने मुझे सिखाई। उन्हें पता था, मैं आमों का शौकीन हूँ। गंगा काका का आमों का बगीचा था। माँ उनसे माँगकर छोटे-छोटे आम या अमियाँ ले आतीं। उनकी अलग-अलग ढेरियाँ बनाकर समझातीं...

सरू की माँ : देख बेटा, यह एक है, यह दो, यह तीन, यह चार...! अब तू भी सारी ढेरियाँ ठीक-ठीक गिनकर बता दे, तो ये सारे आम तुझे खाने को मिलेंगे।

बालक सरू : (आमों की अलग-अलग ढेरियों की ओर उँगली से इशारा करते हुए) माँ, इस ढेरी में तीन आम हैं, इसमें दो, इसमें पाँच और इस आखिर वाली में एक।

सरू की माँ : शाबाश। ले, अब ये सभी आम तेरे हो गए इनाम में।

सरस्वती बाबू : (व्याख्यान देते हुए...) और यों गिनती सीखने का सिलसिला शुरू हुआ। दस तक सीख गया, तो फिर आगे झटपट सीखता गया। गंगा काका से पाँच तक पहाड़े भी सीख लिए। मैं सोचता था, जैसे माँ पढ़ाती हैं, जैसे गंगा काका

पढ़ाते हैं, वैसे स्कूल के मास्टर जी क्यों नहीं पढ़ाते? ये लोग अनपढ़ हैं, मगर कैसे प्यार से पढ़ाते हैं। कितना आनंद आता है पढ़ने में?

पद्मधर जी : आज सरस्वती बाबू कितना अद्भुत प्रसंग सुना रहे हैं। यह कथा तो उनकी किसी कहानी से कम नहीं है।

(मंच पर उपस्थित सभी लोग भावमग्न होकर सिर हिला रहे हैं।)

चौथा दृश्य

(कोई पंद्रह दिन के अंदर ही बालक सरू वर्णमाला, गिनती, पहाड़े सब सीख गया। माँ उसकी उँगली पकड़कर स्कूल ले गईं। मास्टर कमलाकांत जी से बोलीं...)

सरू की माँ : मास्टर जी, इससे वर्णमाला, गिनती, पहाड़े कुछ भी पूछ लीजिए। यहीं मेरे सामने। लेकिन मारिएगा नहीं। मारने से यह सब कुछ भूल जाता है।

मास्टर जी : ठीक है। हाँ सरू बेटा, पूछ लूँ?

सरू : पूछ लीजिए मास्टर जी।

मास्टर जी : अच्छा, सात निम्मा बता दो।

सरू : मास्टर जी, सात निम्मा तिरेसठ।

मास्टर जी : अच्छा, वर्णमाला याद है? तो बता, त तराजू के बाद क्या आता है? और ब बकरी के बाद क्या आता है?

सरू : मास्टर जी, त तराजू के बाद थ थाली और ब बकरी के बाद भ भट्ठी।

मास्टर जी : (खुश होकर) वाह, तू तो बड़ा होशियार हो गया रे सरू?

(सरू की माँ के चेहरे पर फोकस। माँ का चेहरा खुशी से दिप-दिप कर रहा है।)

पाँचवाँ दृश्य

(मंच पर अपना व्याख्यान देते हुए सरस्वती बाबू थोड़ा सा रुके, जैसे अपने आपको सँभाल रहे हों। एक क्षण के बाद उन्होंने कहा...)

सरस्वती बाबू : उस साल मैं अपनी पूरी क्लास में फर्स्ट आया और आगे भी हमेशा मेरे अंक क्लास में सबसे ज्यादा आते। हाई स्कूल में तो मेरी सातवीं पोजीशन थी और मुझे स्कॉलरशिप मिलने लगा था। उसके बाद मैं कभी हारा नहीं। आगे ही बढ़ता चला गया। लेकिन...उस दिन अगर माँ सँभाल न लेतीं, तो आज मैं वाकई अनपढ़ होता। मैं अकेला बेटा था। घर में घोर गरीबी थी, पर माँ को मेरे स्कूल से भागने का पता लगा, तो एक ही बात उनके मुँह से निकली थी...

सरू की माँ : नहीं, मेरा बेटा अनपढ़ नहीं रहेगा। मैं उसे पढ़ाऊँगी। चाहे जैसे भी हो, पढ़ाऊँगी!

गंगा काका : चिंता न करो, सरू की माँ। लड़का जहीन है, जरूर आगे निकलेगा। जहाँ भी मुश्किल आएगी, मैं भी इसकी मदद कर दूँगा। तुम चिंता न करो।

सरू की माँ : (चेहरे पर अपार दृढ़ता) मैं तो बस एक ही बात जानती हूँ गंगा कि मेरा बच्चा पढ़ेगा, पढ़ेगा, पढ़ेगा। इसे कोई रोक नहीं सकता।

सरस्वती बाबू : (आगे व्याख्यान देते हुए...) वही माँ मेरी पहली गुरु थीं। आज वे नहीं है, पर उनका चेहरा याद करके आज भी मेरी आँखें भर आती हैं। पर हाँ, गंगा काका जरूर सामने बैठे हैं। इस उम्र में यहाँ तक आने के लिए उन्हें कितना कष्ट करना पड़ा होगा। फिर भी वे आए। मुझे इजाजत दीजिए कि मैं उनके चरणों की धूल लेकर, उन्हीं के पास बैठूँ।

(कहकर सरस्वती बाबू तेजी से गंगा काका की ओर बढ़ जाते हैं...)

छठा दृश्य

(सरस्वती बाबू गंगा काका के पास जाकर उनके चरणों पर जा गिरे। गंगा काका ने उन्हें छाती से लगा लिया और सिर पर हाथ फेरने लगे। सभा में तालियों की गड़गड़ाहट होने लगी। सभी यह दृश्य देखकर भाव-विभोर थे।)

एक लेखक : धन्य हैं सरस्वती बाबू, धन्य हैं धन्य।

दूसरा लेखक : सरस्वती बाबू महान हैं।

तीसरा लेखक : सादगी हो तो ऐसी।

चौथा लेखक : इसीलिए तो सरस्वती बाबू आम लोगों के सबसे प्यारे लेखक हैं।

(इसके बाद सभा के अध्यक्ष पद्मधर जी उठे और उन्होंने सरस्वती बाबू के साहित्य और उनकी सरलता की प्रशंसा करते हुए कहा...)

पद्मधर जी : सरस्वती बाबू की सच्ची महानता यही है कि उनका हृदय एक बच्चे की तरह सरल है।

(सभा समाप्त होने पर सरस्वती बाबू भावमग्न होकर गंगा काका से कह रहे हैं...)

सरस्वती बाबू : काका, मैंने तय कर लिया है कि अपने गाँव में ही माँ की याद में एक पाठशाला खोलूँगा और वहाँ नन्हे-मुन्ने बच्चों को प्यार से पढ़ाया करूँगा।

गंगा काका : बहुत अच्छी बात सोची तुमने बेटा। बहुत अच्छी। गाँव-गाँव में शिक्षा फैलेगी, तो भारत फिर से महान बनेगा।

(सरस्वती बाबू के चेहरे पर प्रकाश। उनके पीछे माँ का चेहरा और आशीर्वाद की मुद्रा में आगे बढ़ा हुआ हाथ नजर आता है...)

(परदा गिरता है।)



जब राजकुमारी ने भूख को जाना

पात्र-परिचय
राजकुमारी नंदिनी
राजकुमारी नंदिनी के पिता राजा यशोवर्धन
जयंत
प्रजा के लोग
राजकुमारी की सखियाँ

पहला दृश्य

(स्थान—एक प्राचीन राज्य सुनहलानगर के महल का दृश्य। सुनहलानगर इतना सुंदर है कि जो भी देखता है, बस देखता ही रह जाता है। वहाँ सुंदर महल, सुंदर बगीचे, सुंदर झीलें, सुंदर पहाड़ और नदियाँ हैं। इससे भी बढ़कर खासियत यह है कि सब ओर सोना ही सोना बिखरा हुआ है। इतना सोना है वहाँ कि सोने के सिक्के चलते हैं। सोने की मूर्तियाँ और खिलौने बनते हैं और स्त्रियाँ सोने के गहनों से लदी रहती हैं। शायद इसीलिए इस नगर का नाम ही पड़ गया है सुनहलानगर।...)

एक आदमी : धरती पर हमारे राज्य सुनहलानगर से सुंदर कोई और राज्य नहीं है।

दूसरा आदमी : समुद्र के किनारे पर बसा है सुनहलानगर, इसलिए व्यापार में भी सबसे आगे है।

तीसरा आदमी : फिर यहाँ एक से एक धनवान व्यापारी हैं। सारी दुनिया में उनका व्यापार चलता है। दूर देशों के राजा-रानी भी उनसे कीमती चीजें मँगवाकर खरीदा करते हैं।

(सुनहलानगर के राजा यशोवर्धन बीमार रहते थे। रानी गुजर चुकी थीं। इसलिए सुनहलानगर की देखभाल का जिम्मा राजकुमारी नंदिनी पर ही था।)

एक आदमी : सुनहलानगर की राजकुमारी नंदिनी सचमुच सुंदर है। और धन उसके पास इतना है कि उसके महल का हर कमरा हीरे-जवाहरात से भरा रहता है।

दूसरा आदमी : फिर उसमें उदारता भी तो है। जरूरत पड़ने पर वह लोगों की मदद भी करती है।

तीसरा आदमी : पर राजकुमारी नंदिनी में एक ही बुराई है, वह तुनक-मिजाज बहुत है। जो जी में आता, उसे कर डालती है। फिर चाहे लोग लाख परेशान होते रहें, वह किसी की नहीं सुनती।

चौथा आदमी : पर मुझे लगता है कि समय आने पर वह खुद सारी बातें सीख लेगी।

पहला आदमी : हाँ, मुझे भी यही लगता है।
(बातें करते-करते लोग अपने-अपने घर चले जाते हैं।)



दूसरा दृश्य

(महल में राजा यशोवर्धन और राजकुमारी नंदिनी। राजा समझा रहे थे...)

राजा : बेटी, तुम्हारा विवाह हो जाए, तो मैं चिंतामुक्त हो जाऊँ। तुम खुद ही अपने लिए कोई योग्य और गुणवान युवक खोज लो।

राजकुमारी : (तुनककर) पिता जी, जो मेरे जैसा सुंदर और बुद्धिमान हो, मैं तो उसी से शादी करूँगी।

राजा : बेटी, ढूँढ़ो तो कोई न कोई जरूर मिलेगा। पर पहले ही सबके बारे में राय बना लेना ठीक नहीं है।

राजकुमारी : नहीं पिता जी, अभी तक मुझे कोई योग्य और गुणवान राजकुमार नहीं मिला। मैंने प्रतिज्ञा की है कि मुझे अपने योग्य कोई राजकुमार नहीं मिला, तो मैं

विवाह करूँगी ही नहीं।

राजा : (निराश होकर) ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी।

तीसरा दृश्य

(एक दिन राजकुमारी नंदिनी अपनी सखियों के बीच बैठी थी। सखियाँ सभी धनी और संपन्न परिवारों की थीं। सब अपनी-अपनी खूब तारीफ कर रही थीं। तभी अचानक बात चल निकली कि दुनिया की सबसे सुंदर चीज क्या है? सबने अपनी-अपनी बात कही...)

एक सखी : दुनिया की सबसे सुंदर चीज तो मेरे पास है।

दूसरी सखी : (मुसकराते हुए) नहीं, वह तो मेरे पास है।

तीसरी सखी : (घमंड से इतराकर) नहीं, मेरे पास है।

चौथी सखी : (सीधे हाथ की उँगली से अपने हीरे के हार की ओर इशारा करते हुए) जी नहीं, आप में से किसी के पास नहीं। मेरे पास है दुनिया की सबसे सुंदर चीज।

राजकुमारी : (अपने आप से) मैं क्या कहूँ, क्या नहीं? मैं तो यह भी नहीं जानती कि दुनिया की सबसे सुंदर चीज है कौन सी?

(सखियाँ चली गईं, पर राजकुमारी नंदिनी इन्हीं विचारों में गुम थी। इतने में ही जयंत उससे मिलने आया। वह सुनहलानगर का सबसे अच्छा जहाजी कप्तान था। अकसर सुनहलानगर से अच्छी-अच्छी चीजें साथ लेकर सारी दुनिया की सैर के लिए निकल जाता। लौटते समय दुनिया की एक से एक बेशकीमती और विलक्षण चीजें अपने साथ लाया करता था। उनमें से कई अनोखी चीजें उसने राजकुमारी नंदिनी को भी भेंट की थीं। नंदिनी को जयंत अच्छा लगने लगा था। इसलिए जयंत जब भी दुनिया की सैर के लिए निकलता या फिर लौटकर आता, तो वह नंदिनी से मिलने जरूर आता था। पर इस बार जयंत आया तो...)

राजकुमारी : जयंत, मेरा एक काम करोगे?

जयंत : (मुसकराते हुए) बताइए, राजकुमारी जी।

राजकुमारी : इस बार लौटते समय तुम मेरे लिए दुनिया की सबसे सुंदर चीज लाना।

जयंत : (कुछ सोचते हुए) अच्छा, ठीक है, पर उस चीज का नाम...?

राजकुमारी : (हँसकर) वह तुम सोचो।

(जयंत राजकुमारी से विदा लेकर चला आया। समुद्र तट पर आकर उसने अपने कुशल नाविकों को इशारा किया। जहाज तो पहले से ही तैयार था। जयंत का इशारा होते ही जहाज चल पड़ा।)

चौथा दृश्य

(स्थान—कमालपुर राज्य का दृश्य। कमालपुर बहुत सुंदर और समृद्ध राज्य है। जयंत कमालपुर में पहुँचकर जगह-जगह घूम रहा है। वहाँ मन को मोह लेने वाली एक से एक कमाल की चीजें थीं। पर जयंत पसोपेश में था...)

जयंत : (अपने आप से) भला ऐसी कौन सी चीज है जो दुनिया में सबसे सुंदर है और जिसे पाकर राजकुमारी नंदिनी का चेहरा खिल जाए? ओह, मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा।

(जयंत इसी तरह कमालपुर में भटक रहा था कि एक दिन सुनहलानगर से आए एक युवक से उसकी भेंट हुई। उस युवक ने बताया...)

युवक : आपको शायद पता नहीं है, सुनहलानगर में अकाल पड़ गया है। लोगों के पास पैसा है, सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात हैं, लेकिन खाने के लिए अन्न के एक-एक दाने को वे तरस रहे हैं।

(यह सुनते ही जयंत ने एक क्षण में ही निर्णय कर लिया। उसने अपने आप से कहा...)

जयंत : कमालपुर में बहुत अच्छी किस्म का गेहूँ है। सोने की तरह खूब दम-दम दमकता हुआ। तो यही क्यों न ले जाऊँ? इस समय सुनहलानगर के लोगों के लिए इससे बेशकीमती चीज दुनिया में कोई और नहीं हो सकती।

(जयंत ने उसी समय कमालपुर के व्यापारियों से कहा...)

जयंत : मेरे जहाज में जितना गेहूँ आ सकता है, भर दो। जल्दी से जल्दी।

(बदले में जयंत सुनहलानगर से जो कीमती हीरे-जवाहरात लाया था, उसने वे व्यापारियों को दे दिए। अब जयंत का जहाज तेजी से सुनहलानगर की ओर लौट रहा था।)

पाँचवाँ दृश्य

(कोई पंद्रह दिन बाद जयंत सुनहलानगर पहुँचा। जहाज को किनारे पर लगाकर वह दौड़ा-दौड़ा राजकुमारी नंदिनी के महल की ओर गया। उत्साह से भरकर बोला...)

जयंत : राजकुमारी जी, मैं दुनिया की सबसे सुंदर चीज ले आया हूँ। चलिए, मेरे साथ चलकर देख लीजिए।

राजकुमारी : (खुशी के मारे चिल्लाती हुई) अरे, तो यहाँ क्यों नहीं लाए? मैं जानती हूँ कि तुम मेरे लिए पंपापुर से हाथी दाँत की सुंदर कलाकृतियाँ लाए होंगे। उनसे सुंदर शायद इस दुनिया में कुछ नहीं है।

जयंत : (मुसकराते हुए) आप चलिए तो मेरे साथ।

(नंदिनी ने अपना रथ निकलवाया और जयंत के साथ बैठकर समुद्र तट की ओर चल पड़ी। वहाँ सैकड़ों मजदूर जहाज से गेहूँ की बोरियाँ उतारकर

किनारे रख रहे थे। कुछ दूर गेहूँ की बड़ी-बड़ी ढेरियाँ भी थीं। उस गेहूँ में एकदम सोने जैसी ऐसी उजास थी, पर नंदिनी ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। उचटती नजरों से उधर देखते हुए बोली...)

राजकुमारी : हाँ जयंत, अब बताओ, मेरी वह बेशकीमती चीज कहाँ है? मैं जल्दी से देख लेना चाहती हूँ उसे।

(जयंत ने अपनी दोनों बाहें फैलाकर समुद्र तट पर पड़े सैकड़ों बोरों और गेहूँ की बड़ी-बड़ी ढेरियों की ओर इशारा किया...)

जयंत : वह देखिए राजकुमारी! अन्न से अधिक सुंदर और कीमती चीज इस दुनिया में कोई और नहीं है। इसके आगे सारे हीरे-जवाहरात और धन-दौलत बेकार हैं। भूखे आदमी का पेट अन्न से ही भरता है, सोने-चाँदी और हीरे-जवाहरात से नहीं। फिर एक बार आप गेहूँ के इन दानों को अपने हाथ में लेकर देखिए तो!

(सुनते ही नंदिनी गुस्से के मारे काँपने लगी। उसने चिल्लाते हुए कहा...)

जयंत : अच्छा, मैं तुम्हें सबक सिखाती हूँ।

राजकुमारी : (मजदूरों को आदेश देते हुए) यह सारा गेहूँ समुद्र में फेंक दो। और जहाज में अब भी जो गेहूँ भरा पड़ा है, उसे जहाज उलटकर समुद्र में डाल दो।

(सुनते ही लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए...)

एक आदमी : यह क्या कह रही हैं राजकुमारी जी?

दूसरा आदमी : अकाल की हालत में गेहूँ का एक-एक दाना बेशकीमती है। इसे भला समुद्र में कैसे डाला जाए?

(मजदूर राजकुमारी नंदिनी का आदेश मानने में हिचक रहे थे। उधर थोड़ी देर में ही कमालपुर से अनाज आने और उसे समुद्र में फेंक दिए जाने के राजकुमारी के आदेश की खबर पूरे सुनहलानगर में फैल गई थी। जनता ने वहाँ आकर जहाज को घेर लिया था। वे राजकुमारी नंदिनी से गिड़गिड़ाकर कह रहे थे...)

सभी लोग : राजकुमारी जी, आप अपना आदेश वापस ले लीजिए। हमारे पास खाने के लिए अब कुछ भी नहीं बचा। खाना नहीं मिला, तो हम मर जाएँगे।

राजकुमारी : (गुस्से में चिल्लाते हुए) मरते हो तो मर जाओ। मुझे किसी की परवाह नहीं। मेरा आदेश अब वापस नहीं हो सकता।

(सुनहलानगर के सैनिकों से) जो मजदूर मेरा आदेश न मानें, उन्हें गिरफ्तार कर लो। अभी तुरंत यह सारा गेहूँ समुद्र में फेंक दो।

सभी लोग : (एक साथ चिल्लाते हुए) हाय, अब तो लगता है, हमारे नसीब में भूखों मरना ही लिखा है। खाने के लिए एक दाना नहीं है, पर लाखों मन अनाज समुद्र के पानी में...

औरतों की : (रोते हुए) हाय, कोई तो राजकुमारी को इस पाप से बचाओ। यह तो सर्वनाश

भीड़ : है, सर्वनाश।

(सैनिक अस्त्र लेकर आगे आ गए, तो जनता भय के मारे चिल्लाती हुई, पीछे हट गई। मजदूरों ने डरकर राजकुमारी नंदिनी के आदेश का पालन करना शुरू कर दिया। गेहूँ की सैकड़ों बोरियाँ विशाल समुद्र के पेट में चली गई थीं। सब ओर सुनहलानगर की भूखी जनता का आर्तनाद सुनाई पड़ रहा था। जयंत दुखी और उदास सा यह देख रहा था। पर नंदिनी खुश थी। जयंत की ओर देखते हुए कठोरता से...)

राजकुमारी : मुझे लगता है, यह सबक तुम्हें जीवन भर याद रहेगा।

जयंत : और मेरी बात भी याद रखिएगा राजकुमारी जी। अभी आपको पता नहीं है कि भूख क्या है? जिस दिन आपको भूख का पता चल जाएगा, आप अपने फैसले पर जार-जार रोएँगी और इस घटना को याद करके पछताएँगी। (लोगों की भीड़ को देखते हुए) इस देश में अन्याय बढ़ गया है। मैं किसी नई जगह की खोज में जा रहा हूँ। जो लोग मेरे साथ आना चाहें, आ जाएँ।
(जयंत सुनहलानगर छोड़कर चल दिया। राज्य के बहुत से लोग भी अपना-अपना जरूरी सामान लेकर जयंत के जहाज पर बैठ गए। और जहाज सुनहलानगर से चल पड़ा।)

छठा दृश्य

(चलते-चलते जहाज एक अज्ञात टापू पर आ गया। वहाँ चारों ओर पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ थीं। जयंत ने वहीं लोगों को उतरने के लिए कहा...)

जयंत : चलिए, हम लोग इस टापू पर पहुँचकर पहले तो जी भरकर पेड़ों के फल खाएँ। सभी को भूख लग आई होगी। और यहाँ तो चारों ओर फलदार पेड़ और मीठे जंगली बेरों की सुंदर-सुंदर झाड़ियाँ हैं। हम यहाँ रहकर खूब मेहनत करेंगे, अनाज उपजाएँगे।
(धीरे-धीरे वह टापू बसने लगा। वहाँ सुंदर घर और इमारतें भी बन गईं। जयंत ने उस टापू का सुंदर सा नाम रखा...)

जयंत : (मुसकराते हुए) सब लोग यहाँ बड़े प्यार और खुशी से रहते हैं। इसलिए इस टापू का नाम होगा, उल्लास नगर।
(अपने आप से) उल्लास नगर में अब सारे सुख, सारी सुविधाएँ हैं। हम सबका जीवन बड़े आराम से गुजर रहा है। लेकिन कभी-कभी मुझे सुनहलानगर की राजकुमारी नंदिनी की याद आ जाती है, तो मन बहुत उदास हो उठता है। वह जिद्दी बहुत है, पर काश, वह इस जिंदगी की सच्चाई को समझ पाती।

(उधर सुनहलानगर की हालत सचमुच बुरी थी। सब ओर अनाज के लिए 'हाय-हाय' करती, चिल्लाती जनता का आर्तनाद सुनाई पड़ता। कल तक जो लोग खुशियों से छलछला रहे थे, आज भूख के मारे उनके शरीर की हड्डियाँ निकली पड़ रही थीं। बहुत से लोग तो भूख से तड़प-तड़पकर मर गए थे। सुहलानगर से आए लोगों ने जयंत को बताया...)

एक आदमी : बहुत बुरी खबर है भाई जयंत। राजा यशोवर्धन नहीं रहे। सुनहलानगर की हालत देखकर राजा इतने दुखी थे कि एक लंबी आह के साथ उनके प्राण-पखेरू उड़ गए।

दूसरा आदमी : अब जगह-जगह लोग राजकुमारी नंदिनी को धिक्कार रहे हैं। सभी उसे इस बात के लिए कोस रहे हैं कि उसने इतना बढ़िया और अकूत अनाज समुद्र में क्यों फिंकवा दिया?

तीसरा आदमी : रोज सैकड़ों लोग राजकुमारी नंदिनी के महल को घेरकर उससे अनाज माँगते हैं। खुद नंदिनी के महल में अब बहुत थोड़ा अनाज बच गया है। सोना-चाँदी और हीरे-जवाहरात के ढेर हैं, लेकिन उन्हें खाया तो नहीं जा सकता।

जयंत : (भौचक्का होकर) अरे, सुनहलानगर की यह हालत? मैंने तो इसकी कल्पना तक नहीं की थी। (कुछ देर बाद अपने आप से) सुनहलानगर की हालत ने मुझे बड़ी चिंता में डाल दिया है। मैं क्या करूँ, समझ में नहीं आता। सुनहलानगर की मैं मदद कर सकता हूँ, पर कहीं राजकुमारी नंदिनी ने बुरा माना तो? काश, अब भी राजकुमारी नंदिनी को अक्ल आ जाए।

सातवाँ दृश्य

(सुनहलानगर के राजमहल का दृश्य। राजकुमारी नंदिनी अब बुरी तरह पछता रही है। जयंत की बातें उसे सही लगने लगी हैं। लेकिन अब क्या हो सकता है? जितना हो सका, उसने लोगों की मदद की। लेकिन फिर एक दिन ऐसा भी आया कि उसके महल में गेहूँ का एक दाना तक नहीं बचा। उसने अपनी सहेली अवंतिका से कहा...)

राजकुमारी : सुनो अवंतिका, एक जहाज में हीरे-जवाहरात भरकर मैं कमालपुर जाती हूँ। वहीं से गेहूँ लेकर आऊँगी, ताकि सुनहलानगर की जनता का दुख दूर हो सके।

अवंतिका : तो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ नंदिनी।

राजकुमारी : नहीं अवंतिका, तुम मेरे पीछे लोगों को सँभालना। जितना हो सके, भरोसा दिलाना और उनकी मदद करना। मैं जल्दी ही ढेर सारा अन्न लेकर लौटूँगी। गेहूँ, चावल, चने, जो भी मिल सके। अपने राज्य में मैं किसी एक आदमी को भी भूख से नहीं मरने दूँगी।

(नंदिनी ने जहाज तैयार करवाया। उसमें कीमती हीरे-मोती और जवाहरात रखवाए। एक होशियार कप्तान उसे लेकर चल पड़ा। लेकिन कुछ आगे चलते ही जोर का तूफान आया। जहाज में बैठी नंदिनी मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी...)

राजकुमारी : हे राम, जल्दी से जल्दी जहाज कमालपुर पहुँच जाए, तब मुझे कुछ चैन मिलेगा। जाने क्या बात है, जयंत की बातें याद करके आज मेरी बुरी तरह रुलाई छूट रही है। मेरी आँखों से लगातार आँसू बह रहे हैं, फिर भी भीतर का दुख कम नहीं होता।

(अभी कमालपुर दूर था कि जहाज बुरी तरह डगमगाने लगा। उसमें कुछ-कुछ पानी भी भर आया था। हीरे-मोतियों और जवाहरात के सैकड़ों बोरे जहाज में लदे थे। उनका बोझ इतना था कि नंदिनी हताश होकर सोचने लगी...)

राजकुमारी : कहीं इन हीरे-जवाहरात की वजह से जहाज डूब न जाए। तो ठीक है, इन हीरे-जवाहरात की कुछ पेटियों को ही समुद्र में फिंकवा देती हूँ। (सेवकों से...) जल्दी से ये बोरे उठा-उठाकर समुद्र में फेंक दो।

(पर इसके बावजूद तूफान का वेग इतना था कि जहाज बुरी तरह डगमगाया और उसके बाद समुद्र के भीतर समाता चला गया।)

आठवाँ दृश्य

(अगले दिन सुबह का दृश्य। नंदिनी ने खुद को समुद्र के किनारे टापू पर पाया। पता नहीं कैसे वह एक तख्ते के सहारे बहते-बहते इस टापू तक आ गई थी। और यहाँ आते ही बेहोश हो गई थी। थोड़ा होश में आने पर आनंदित होकर...)

राजकुमारी : अरे वाह, मुझे चारों ओर दूर-दूर तक लहराती गेहूँ की सुंदर बालियाँ नजर आ रही हैं। बहुत जोर की भूख लग आई है, बहुत जोर की। कल से पेट में अनाज का एक दाना तक नहीं गया। तो क्या इस गेहूँ को खाकर ही भूख मिटा ऊँ? आह, ये मुझे दूर से ही कुछ इस तरह खींच रही हैं कि...क्या कहूँ? वाकई जयंत ने सच कहा था, दुनिया की सबसे सुंदर चीज अन्न है। इसी को खाकर तो दुनिया जीवित है, नहीं तो...

(नंदिनी की आँखें खुशी से चमक उठती हैं। वह दौड़कर एक खेत तक गई और गेहूँ की बालियों में से दाने निकाल-निकालकर खाने लगी। वह खेत जयंत का ही था। नंदिनी जहाज डूबने के बाद पानी की लहरों के सहारे बहती हुई उल्लासनगर में ही आ गई थी। जयंत ने दूर से देखा तो...)

जयंत : पता नहीं, कौन दुखियारी स्त्री गेहूँ की बालियों में से दाने निकाल-निकालकर

खा रही है। कपड़े बुरी तरह फटे हुए हैं। चेहरे और सारे शरीर पर घाव और खरोंचों के निशान। जरूर यह किसी मुसीबत में है। मुझे इसकी मदद करनी चाहिए।

(वह तेजी से चलकर वहाँ आया और उस अनजान युवती से बड़ी विनम्रता से बोला...)

जयंत : तुम कहाँ से आई हो? भीतर आ जाओ। हमारे खाने का समय हो गया है। तुम भी हमारे साथ भोजन करो, तो हमें खुशी...!

(अभी जयंत की बात पूरी नहीं हुई थी कि नंदिनी ने सिर उठाकर देखा। सामने जयंत को देखते ही उसकी आँखें डबडबा गईं। नंदिनी की हालत बहुत खराब थी। फटे कपड़े, धूल और मिट्टी से सना शरीर। पर अब जयंत ने उसे तुरंत पहचान लिया। बुरी तरह चौंककर...)

जयंत : राजकुमारी जी, आप...? इस हालत में!

राजकुमारी : (फूट-फूटकर रोते हुए) मैं अब राजकुमारी कहाँ? जयंत, मैं तो अब भिखारिन हूँ।

जयंत : (प्यार और विनम्रता से भरे स्वर में) लेकिन आप मेरे लिए तो वही राजकुमारी हैं।

(जयंत ने भीतर बुलाकर राजकुमारी नंदिनी को सुंदर वस्त्र पहनने के लिए दिए। नहा-धोकर उसने वे वस्त्र पहने, तो वह पहले से कहीं अधिक सुंदर नजर आ रही थी। फिर उसने जयंत के साथ ही बैठकर खाना खाया और देर तक सुनहलानगर के लोगों के दुख-दर्द की कहानी सुनाती रही। सुनकर जयंत ने दिलासा दिया...)

जयंत : चिंता न करो, राजकुमारी नंदिनी, अब मैं भी तुम्हारे साथ मिलकर सुनहलानगर की प्रजा के दुखों को दूर करूँगा। और अगर तुम्हें पसंद हो, तो हम विवाह करके एक-दूसरे को ढेर सारी खुशियाँ दे सकते हैं।

राजकुमारी : (बिलखकर रोते हुए) पर जयंत, अब मेरे पास धन-दौलत कुछ नहीं है।

जयंत : (मिठास भरे स्वर में) अब तुमने नेकी का पाठ पढ़ लिया है नंदिनी। साथ ही भूख को जान लिया है। इसलिए हर आदमी का दुख-दर्द अब तुम्हें ज्यादा महसूस होगा। यही तुम्हारी सबसे बड़ी दौलत है।

(कुछ दिन बाद जयंत और नंदिनी की शादी हो गई। जयंत उल्लासनगर से गेहूँ की सैकड़ों बोरियाँ जहाज में भरकर नंदिनी के साथ सुनहलानगर पहुँचा। सुनहलानगर की प्रजा को जैसे ही पता चला, वे इकट्ठे होकर आ गए। उनकी खुशी और उत्साह का ठिकाना न था। सबसे आगे थी राजकुमारी की सहेली अवंतिका। सबने मिलकर जयंत और नंदिनी का जयजयकार किया...)

सभी लोग : (एक साथ मिलकर) महाराज जयंत की जय, महारानी नंदिनी की जय...।

(परदा गिरता है।)

नन्हा गुलाब पढ़ता नई किताब

पात्र-परिचय
नट और नटी,
नील, चंदू, निक्का, नीना, मिंकी, छुटकी आदि बच्चे
और लंबा सुर लेकर गाने वाले गवैया पन्नू भैया....
साथ ही नन्हा गुलाब
(एक छोटे बच्चे को खूबसूरत मुखौटा लगाकर
गुलाब बनाया जा सकता है।)

पहला दृश्य

(स्थान—कॉलोनी के बीच में एक सुंदर छोटा सा पार्क। वहाँ कहीं से घूमते हुए नट और नटी आए हैं। दूर से उन्हें गुलाबों की बस्ती की गंध आकर्षित करती है और फिर वे उसी को लेकर बड़ी उत्सुकता से बातें करने लगते हैं...।)

नट : अरे-अरे, यह कहाँ आ गए हम?
कुछ बोलो ना, अरी नटी,
यह जगह कौन सी है?

नटी : (मुग्ध होकर) सुनो-सुनो नट,
महकी-महकी यहाँ हवाएँ हैं,
खुशबू उड़ती मधुर गुलाबों की,
मुझको तो लगता यहाँ गुलाबों की एक सुंदर बस्ती सी है।

नट : (अचरज से भरकर)
बस्ती एक गुलाबों की?
वाह-वाह वा, वाह-वाह वा,
हाँ-हाँ, कहती है यही हवा,
बस्ती है यहाँ गुलाबों की...
लगता, जैसे आसपास ही
फूल खिले हैं ढेर-ढेर गुलाबों के।

नटी : (नृत्य-मुद्रा में प्रसन्नता की झलक पेश करती हुई हुई...)
हाँ-हाँ, हाँ-हाँ, फूल खिले हैं,
फूल खिले हैं ढेर-ढेर से

कितने सुर्ख गुलाबों के।
देखो-देखो सामने,
वहीं तो है बस्ती मधुर गुलाबों की।

नट : चलो-चलो, फिर वहीं चलें।

नटी : हाँ-हाँ, हाँ-हाँ, चलो, वहीं चलते हैं।
(नृत्य-मुद्रा में चलते-चलते दोनों झटपट गुलाबों की अनोखी बस्ती में पहुँच जाते हैं। नटी रीझकर बता रही है...)
ओहो-ओहो, ओहो-ओहो,
देखो तो नट,
किस्म-किस्म के अजब-गजब गुलाबों का
यहाँ सजा है मेला,
तरह-तरह के रंगों वाले
रूपों वाले मस्त गुलाब...
अहा, सुगंध जिनकी मन को हरषाती है।

नट : हाँ-हाँ, सुगंध सचमुच ऐसी,
जैसे नंदन-कानन में बैठे हों।

नटी : या स्वर्ग ही उतर आया हो
धरती पर...

नट : (चकित होकर) और मजे की बात,
गुलाब ये बोला भी करते हैं।

नटी : बोला भी करते हैं...?

नट : हाँ-हाँ, सुर्ख गुलाब ये
खूब बोलते, हँसते भी हैं...
अभी-अभी बगिया में बच्चों की बातें सुनकर
सच मैं तो हैरान रह गया।

नटी : सचमुच बात ही हैरानी की है।

नट : अच्छा, क्या कर रहे थे वे बातें?

नटी : चलो-चलो ना वहीं, चलो नट,
बच्चे जहाँ गुलाबों के संग खेल रहे हैं,
साथ-साथ बातें करके हँसते भी जाते।

नट : हाँ-हाँ, चलो-चलो अब हम भी,
वहीं...वहीं चलते हैं।
(दोनों चलकर वहाँ पहुँच जाते हैं, जहाँ बहुत से बच्चे गुलाबों की बस्ती में खेलते हुए, साथ ही साथ गुलाबों से बात भी करते जाते हैं। नटी मुग्ध होकर कहती है...)

नटी : अरे, यहाँ तो अजब दृश्य है,
गजब दृश्य है।

नट : (उत्सुकता से)
भला क्या कह रहे हैं बच्चे उन गुलाबों से ?

नटी : चलो यहाँ छिपकर सुन लें...
(नट और नटी छिपकर बच्चों की बातें सुनते हुए साथ-साथ हँसते और खुशी प्रकट करते हैं।)



दूसरा दृश्य

(नट और नटी छिपकर बच्चों की बातें सुन रहे हैं। बच्चे गुलाबों की सुंदरता को देखकर हैरान हैं। और एक गुलाब ने तो उन्हें चक्कर में ही डाल दिया है। धूप में बैठा वह नन्हा गुलाब का फूल हाथों में किताब पकड़े मजे से नया पाठ पढ़ रहा है। बच्चे देखकर चकराए...)

नील : अरे-अरे, क्या बात गजब है,
बात गजब है, बात अजब है,

		बड़ी सुबह से बैठ धूप में पढ़ता नई किताब, नन्हा एक गुलाब!
निक्की	:	(दोनों हाथों को चिड़ियों के पंखों की तरह हिलाते हुए अपनी प्रसन्नता प्रकट करता है...) उस मीठी, प्यारी बगिया में।
मिंकी	:	जाने कितने रंगों वाली।
छुटकी	:	जाने कितने चित्रों वाली।
चंदू	:	प्यारे-प्यारे किस्सों वाली।
नील	:	आहा, नई किताब! पढ़ता नन्हा एक गुलाब! आहा, नई किताब, आहा, नई किताब।
सब बच्चे	:	(मस्ती से भरकर दोहराते हैं) आहा, नई किताब पढ़ता नन्हा एक गुलाब! नन्हा एक गुलाब...नन्हा एक गुलाब!
नील	:	उसमें हैं जी मीठे किस्से।
नीना	:	आए वे सब उसके हिस्से।
मिंकी	:	जाने क्या है उसने देखा?
निक्का	:	होंठों पर चहकी एक देखा।
छुटकी	:	बोला—मैं भी पढ़ूँ किताब।
नील	:	बोला—मैं भी पढ़ूँ किताब।
नीना	:	बोला—मैं भी पढ़ूँ किताब।
गुलाब	:	(झूम-झूमकर गाता है...) मैं हूँ नन्हा एक गुलाब, मैं हूँ नन्हा एक गुलाब!
पन्नू भैया	:	(थोड़ी मोटी, खुरदरी आवाज में लंबा आलाप लेकर गाते हैं...) समझ गए जनाब? पढ़ता नई किताब, नन्हा एक गुलाब।
नील	:	इस किताब में मीठी खिल-खिल।
नीना	:	सपनों की एक झिलमिल-झिलमिल।
चंदू	:	(सिर बारी-बारी से दाएँ और बाएँ हिलाता हुआ...)

सबकी गुनता,
सबकी सुनता,
पढ़-पढ़ नई किताब,
करता है आदाब।

नील : नन्हा एक गुलाब,
हाँ जी, नन्हा एक गुलाब।

नीना : नन्हा एक गुलाब!

मिंकी : नन्हा एक गुलाब!

निक्का : नन्हा एक गुलाब!

छुटकी : नन्हा एक गुलाब!

सभी बच्चे : (मिलकर गाते हैं...)
बड़ी सुबह से बैठ धूप में
पढ़ता नई किताब—
नन्हा एक गुलाब!
(इतने में छिपकर बैठे नट और नटी भी निकलकर आ जाते हैं और बच्चों के साथ मिलकर गाने लगते हैं।)

नट : आहा-आहा, ओहो-ओहो।

नटी : हा-हा, हा-हा, हो-हो, हो-हो।

नट : पढ़ता नई किताब।

नटी : नन्हा एक गुलाब।

नट : नन्हा एक गुलाब।

नटी : नन्हा एक गुलाब।

नट : नन्हा एक गुलाब...

पन्नू भैया : (लंबा आलाप लेकर) खोज रहा है नई सुबह के
नए-नए से द्वार,
नन्हा एक गुलाब।

सब बच्चे : (एक साथ नाच-नाचकर गाते हैं)
पढ़ता नई किताब,
नन्हा एक गुलाब...
(नाचते हुए सब इन्हीं पंक्तियों को बार-बार दोहराते हैं। स्वर धीरे-धीरे डूबता जाता है और बच्चे अपनी अलग-अलग मुद्राओं में फ्रीज हो जाते हैं। बीच में गुलाब बना बच्चा और उसकी सुंदर किताब अलग नजर आती है, जिस पर कई रंगों का प्रकाश पड़ता है।)

(परदा गिरता है।)